संचयी परीक्षा

कक्षा IX

हिंदी कोर्स ए

कबीर, ललद्यद, रसखान

2 अंक के का उत्तर 30-40 शब्दों में दीजिए

भाग 1

काव्यांश को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

क.

रस्सी कच्चे धागे की, खींच रही मैं नाव।
जाने कब सुन मेरी पुकार, करें देव भवसागर पार।
पानी टपके कच्चे सकोरे, व्यर्थ प्रयास हो रहे मेरे।
जी में उठती रह-रह हूक, घर जाने की चाह है घेरे।।

1 यहाँ रस्सी किसके लिए प्रयुक्त हुआ है और वह कैसी है ? 2
2 कवयित्री द्वारा मुक्ति के लिए किये जाने वाले प्रयास व्यर्थ क्यों हो रहें है ? 2
3 कवयित्री का घर जाने की चाह से क्या तात्पर्य है? 2

ख.

मोकों कहाँ ढूँढ़े बंदे, मैं तो तेरे पास में।
ना मैं देवल ना मैं मसजिद, ना काबे वैफलास में।
ना तो कौने क्रिया-कर्म में, नहीं योग बैराग में।
खोजी होय तो तुरतै मिलिहौं, पल भर की तालास में।
कहैं कबीर सुनो भई साधो, सब स्वाँसों की स्वाँस में।।

1. 'मोकों कहाँ ढूँढ़े बंदे, मैं तो तेरे पास में' पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए | 2

2 कबीर ने ईश्वर प्राप्ति के लिए किन प्रचलित विश्वासों का खंडन किया है? 2

3 कबीर ने ईश्वर को 'सब स्वाँसों की स्वाँस में' क्यों कहा है? 2

उत्तर संकेत **भाग 1**

उत्तर मात्र संकेत बिंदु है, संदर्भानुसार विद्यार्थी के मौलिक विचारों को भी स्वीकार किया जाए

क.

1 रस्सी यहाँ किसके लिए प्रयुक्त हुआ है बौर वह कैसी है ?

उत्तर 'रस्सी' शब्द जीवन जीने के साधनों के लिए प्रयुक्त हुआ है। वह स्वभाव में कच्ची अर्थात नश्वर है।

2 कवयित्री द्वारा मुक्ति के लिए किये जाने वाले प्रयास व्यर्थ क्यों हो रहें है ?

उत्तर कवयित्री देखती है कि दिन बीतते जाने और अंत समय निकट आने के बाद भी परमात्मा से उसका मेल नहीं हो पाया है। ऐसे में उसे लगता है कि उसकी साधना एवं प्रयास व्यर्थ हुई जा रही है।

3 कवयित्री का घर जाने की चाह से क्या तात्पर्य है ?

उत्तर कवयित्री का घर जाने की चाह से तात्पर्य है परमात्मा से मिलना।

ख.

1. 'मोकों कहाँ ढूँढ़े बंदे, मैं तो तेरे पास में' पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए |

विद्यार्थी के मौलिक विचार

2 कबीर ने ईश्वर प्राप्ति के लिए किन प्रचलित विश्वासों का खंडन किया है?

उत्तर: कबीर ने ईश्वर के प्राप्ति के कई प्रचलित विश्वासों का खंडन किया है। कवि ने बताया है कि मंदिर, मस्जिद या तीर्थस्थलों पर जाने से कुछ नहीं मिलता। कवि ने यह भी बताया है कि बिना मतलब के आडंबरों या पूजा पाठ से कुछ भी हासिल नहीं होता।

3 कबीर ने ईश्वर को 'सब स्वाँसों की स्वाँस में' क्यों कहा है?

उत्तर: कबीर का मानना है कि ईश्वर तो हर जीव के अंदर वास करते हैं। इसलिए कवि ने ईश्वर को सब स्वाँसों की स्वाँस में कहा है।

संचयी परीक्षा

कक्षा IX

हिंदी कोर्स ए

कबीर, ललद्यद, रसखान

2 अंक के का उत्तर 30-40 शब्दों में दीजिए

भाग 2

1. काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों का उत्तर दीजिए:

i)

मोरपखा सिर ऊपर राखिहौं, गुंज की माल गरें पहिरौंगी।
ओढ़ि पितंबर लै लकुटी बन गोधन ग्वारनि संग फिरौंगी॥
भावतो वोहि मेरो रसखानि सों तेरे कहे सब स्वांग करौंगी।
या मुरली मुरलीधर की अधरान धरी अधरा न धरौंगी॥

क. सखी ने गोपी से कृष्ण का कैसा रूप धारण करने का आग्रह किया था? अपने शब्दों में वर्णन कीजिए। 2

ख. 'या मुरली मुरलीधर की अधरान धरी अधरा न धरौंगी॥' पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए| 2

ग. 'स्वांग' से क्या अभिप्राय है? 2

ii)

या लकुटी अरु कामरिया पर राज तिहूँ पुर को तजि डारौं ।
आठह् सिद्धि नवौ निधि के सुख नंद की गाइ चराइ बिसारौं।।
रसखान कबौं इन आँखिन सौं, ब्रज के बन बाग तड़ाग निहारौं।
कोटिक ए कलधौत के धाम करील के कुंजन ऊपर वारौं।।

क. एक लकुटी और कामरिया पर कवि सब कुछ न्योछावर करने को क्यों तैयार हैं? 2

ख. कोटिक ए कलधौत के धाम करील के कुंजन ऊपर वारौं। 2

ग. रेखांकित पंक्तियों में निहित अलंकार बताइए| 2

उत्तर भाग 2

उत्तर मात्र संकेत बिंदु है, संदर्भानुसार विद्यार्थी के मौलिक विचारों को भी स्वीकार किया जाए

क. सखी ने गोपी से कृष्ण का कैसा रूप धारण करने का आग्रह किया था? अपने शब्दों में वर्णन कीजिए। 2

उत्तर: सखी ने गोपी से कृष्ण का रूप धारण करने का आग्रह किया था। वे चाहती हैं कि गोपी मोर मुकुट पहनकर, गले में माला डालकर, पीले वस्त्र धारण कर और हाथ में लाठी लेकर पूरे दिन गायों और ग्वालों के साथ घूमने को तैयार हो जाये। इससे सखियों को हर समय कृष्ण के रूप के दर्शन होते रहेंगे।

ख. 'या मुरली मुरलीधर की अधरान धरी अधरा न धरौंगी॥' पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए| 2

विद्यार्थी की मौलिक अभिव्यक्ति

ग. 'स्वांग' से क्या अभिप्राय है? 2

विद्यार्थी की मौलिक अभिव्यक्ति

ii)

क. एक लकुटी और कामरिया पर कवि सब कुछ न्योछावर करने को क्यों तैयार हैं? 2

उत्तर: कवि हर वह काम करने को तैयार है जिससे वह कृष्ण के सान्निध्य में रह सके। इसलिए वह एक लकुटी और कम्बल पर अपना सब कुछ न्योछावर करने को तैयार है।

ख. कोटिक ए कलधौत के धाम करील के कुंजन ऊपर वारौं। का आशय स्पष्ट कीजिए| 2

उत्तर: कृष्ण के प्रेम के लिए वे किसी भी हद तक जाने को तैयार हैं। यहाँ तक कि ब्रज की कांटेदार झाड़ियों के लिए वे महलों को भी न्योछावर कर देंगे।

ग. रेखांकित पंक्तियों में निहित अलंकार बताइए| 2

अनुप्रास अलंकार

संचयी परीक्षा

कक्षा IX

हिंदी कोर्स ए

कबीर, ललद्यद, रसखान

2 अंक के का उत्तर 30-40 शब्दों में दीजिए

भाग 3

पठित कविताओं के आधार पर पूछे गए प्रश्नों का उत्तर दीजिए:

1 संकलित साखियों और पदों के आधार पर कबीर के धार्मिक और साम्प्रदायिक सद्भाव संबंधी विचारों पर प्रकाश डालिए। 2

2. 'खा-खाकर कुछ पाएगा नहीं,न खाकर बनेगा अंहकारी'। कवयित्री ललद्यद इन पंक्तियों के माध्यम से क्या संदेश देना चाहती हैं? 2

3. ललद्यद और कबीर के विचारों में क्या समानता है? 2

4. आपके विचार से कवि पशु, पक्षी और पहाड़ के रूप में भी कृष्ण का सान्निध्य क्यों प्राप्त करना चाहता है? 2

5. ब्रजभूमि के प्रति कवि रसखान का प्रेम किन किन रूपों में अभिव्यक्त हुआ है? 2

संचयी परीक्षा

कक्षा ix

हिंदी कोर्स ए

दो बैलों की कथा, ल्हासा की ओर

नोट : 2 अंक के प्रश्नों का उत्तर 30-40 शब्दों में दीजिए|

1 गद्यांश को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

झूरी काछी के दोनों बैलों के नाम थे हीरा और मोती । दोनों पछाई जाति के थे -देखने में सुन्दर, काम में चौकस, डील में ऊँचे । बहुत साथ-साथ रहते -रहते दोनों में भाईचारा हो गया। दोनों आमने - सामने या साथ-साथ बैठे हुए एक -दूसरे से मूक भाषा में विचार -विनिमय करते थे। एक-दूसरे के मन की बात कैसे समझ जाता था, हम नहीं कह सकते । अवश्य ही उनमें कोई ऐसी शक्ति थी जिसमें जीवों में श्रेष्ठता का दावा करने वाला मनुष्य वंचित है । दोनों एक दूसरे को चाटकर और सूँघकर अपना प्रेम प्रकट करते, कभी-कभी दोनों सींग भी मिला लिया करते थे- विग्रह के नाते से नही, केवल विनोद के भाव से, आत्मीयता के भाव से, जैसे दोस्तों में घनिष्ठता होते ही धौल-धप्पा होने लगता है।

1 प्रस्तुत गद्यांश के पाठ व लेखक का नाम लिखिए। 2

2 'पछाई जाति' से क्या अभिप्राय है? 2

3 दोनों बैल अपने प्रेम को कैसे जताते थे? 2

4 उनके स्वभाव की विशेषताओं का वर्णन कीजिए। 2

5' अवश्य ही उनमें कोई ऐसी शक्ति थी जिसमें जीवों में श्रेष्ठता का दावा करने वाला मनुष्य वंचित है' इस पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए । 2

2 गदयांश को पढ़ कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए -

तिब्बत में यात्रियों के लिए बहुत सी तकलीफ़ें भी हैं और कुछ आराम की बातें भी | वहाँ जाति-पाँति, छूआछूत का सवाल ही नहीं है और न ही औरतें परदा करती हैं | बहुत निम्न श्रेणी के भिगमंगों को लोग चोरी के डर से घर के भीतर नहीं जाने देते, नहीं तो आप बिलकुल घर के भीतर चले जा सकते हैं | चाहे आप बिलकुल अपरिचित हों, तब भी घर की बहू या सासु को अपनी झोली मे से चाय दे सकते हैं | वह आपके लिए उसे पका देगी | मक्खन और सोडा नमक दे दीजिए वह चाय चोडी में कूटकर उसे दूधवाली चाय के रंग की बना के मिट्टी के टोंटीदार बरतन में रखके आप दे देगी |

1 तिब्बत के लोगों की सबसे बड़ी विशेषता क्या है? 2

2 तिब्बत की स्त्रियाँ अतिथि सत्कार किस प्रकार करती हैं? 2

3 तिब्बत में चाय बनाने का क्या तरीका है? 2

4 तिब्बत में भिखमंगों को लोग घरों के अंदर क्यों नहीं आने देते? 2

5 तिब्बत के लोगों की क्या तकलीफ हैं? 2

संचयी परीक्षा

कक्षा ix

हिंदी कोर्स ए

दो बैलों की कथा, ल्हासा की ओर

पठित पाठों के आधार पर दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :-

1 'दो बैलों की कथा' कहानी में प्रेमचंद ने गधे की किन स्वभावगत विशेषताओं के आधार पर उसके प्रति रूढ़ अर्थ 'मूर्ख' का प्रयोग न कर किसी नए अर्थ की ओर संकेत किया है ?

2 "लेकिन औरत जात पर सींग चलाना मना है, यह भूल जाते हो।" - हीरा के इस कथन के माध्यम से स्त्री के प्रति प्रेमचंद के दृष्टिकोण को स्पष्ट कीजिए।

3 अपनी यात्रा के दौरान लेखक को किन कठिनाइयों का सामना करा पड़ा ? 'ल्हासा की ओर' पाठ के आधार पर लिखिए|

4 किसान जीवन वाले समाज में पशु और मनुष्य के आपसी संबंधों को कहानी में किस तरह व्यक्त किया गया है ?

5 थोंगला के पहले के आख़िरी गाँव पहुँचने पर भिखमंगे के वेश में होने के वावजूद लेखक को ठहरने के लिए उचित स्थान मिला जबकि दूसरी यात्रा के समय भद्र वेश भी उन्हें उचित स्थान नहीं दिला सका। क्यों ?'ल्हासा की ओर' पाठ के आधार पर लिखिए|

6 किन घटनाओं से पता चलता है कि हीरा और मोती में गहरी दोस्ती थी?

7 उस समय के तिब्बत में हथियार का क़ानून न रहने के कारण यात्रियों को किस प्रकार का भय बना रहता था ? 'ल्हासा की ओर' पाठ के आधार पर लिखिए|